भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
पश्चिम रीजनल कमेटी – दण्डकारण्य

प्रेस विज्ञप्ति

15 दिसम्बर 2012

दक्षिण गढ़चिरोली डिवीजनल कमेटी के भूतपूर्व सचिव शेखर और कमेटी सदस्य विजया की गद्दारी की निंदा करो!

11 नवम्बर 2012 को हमारी पार्टी की दक्षिण गढ़चिरोली डिवीजनल कमेटी के भूतपूर्व सचिव शेखर उर्फ मल्लैया और उसकी पत्नी डिवीजनल कमेटी सदस्य विजया ने आंध्रप्रदेश के खम्मम जिले में पुलिस के सामने आत्मसमर्पण किया। पिछले बीस साल से ज्यादा समय से पार्टी में काम करने वाला शेखर 2004 से दण्डकारण्य के गढ़चिरोली जिले में काम कर रहा था। पहले डिवीजनल कमेटी सदस्य के रूप में काम करने के बाद वह 2008 में डिवीजन सचिव और 2009 में पश्चिम रीजनल कमेटी सदस्य बना था। लम्बे समय से क्रांतिकारी आंदोलन में काम करने के बावजूद वह कई कमजोरियों और गलत रुझानों का शिकार रहा। खासकर 2010 से उसके राजनीतिक पतन का सिलसिला शुरू हुआ था। हालांकि उसे बचाने के लिए पूरी पार्टी ने उसके खिलाफ वैचारिक संघर्ष चलाया था, फिर भी उसने आंदोलन और जनता के साथ धोखा देने का ही फैसला ले लिया जिसके पक्ष में उसने दो दशकों तक काम किया था।

एक समय में पार्टी के लिए कई जिम्मेदारियों का निर्वाह करने वाला शेखर खुद को आंदोलन के विकासक्रम के अनुरूप विकसित करने में विफल रहा। जनता के दोस्तों और दुश्मनों को वर्गीय आधार पर पहचानने में वह अक्सर विफल होता रहा। वह जन विरोधियों के साथ दोस्ताना सम्बन्ध रखा करता था। उसके गलत आचरण के कारण डिवीजन में दुश्मन के दलाल और मुखबिर बड़ी संख्या में तैयार हो गए जिससे दुश्मन को आंदोलन पर आक्रामकता के साथ हमला करने का मौका मिला। पार्टी के अंदर नेतृत्व और कार्यकर्ताओं से आलोचना उठने पर वह ईमानदारी से आत्मालोचना करने की बजाए आलोचना करने वालों के साथ द्वेषपूर्ण बरताव किया करता था। अपने संकीर्णतावादी व नौकरशाहाना रवैये के चलते वह पिछले कुछ समय से कैडरों से अलग–थलग पड़ चुका था। उसके गलत व्यवहार से नाराज होकर कुछ कार्यकर्ता आंदोलन को छोड़कर चले गए। शेखर की इन तमाम गलतियों की जड़ उसकी सैद्धांतिक व राजनीतिक कमजोरी में है। इस कमजोरी को दूर करने के लिए इस दिशा में अध्ययन को छोड़कर उसने अहंकार और दूसरों का तिरस्कार का रास्ता चुना।

2010 में उत्तर गढ़चिरोली डिवीजन के भूतपूर्व सचिव और रीजनल कमेटी सदस्य दिवाकर जब दुश्मन का कोवर्ट बनकर पार्टी में विघटनकारी गतिविधियों को अंजाम दे रहा था तब शेखर ने अवसरवादी रवैये को अपनाते हुए उसका अंध समर्थन किया था। अपने अराजक तौर–तरीकों से गढ़चिरोली में पार्टी कतारों के बीच भ्रम की स्थिति फैलाने की कोशिश की। लेकिन पूरी पार्टी ने दिवाकर की साजिशों को अच्छी तरह समझ लिया और दिवाकर के जरिए पार्टी को नुकसान पहुंचाने के दुश्मन के षड़यंत्र को विफल कर दिया। उसी समय समूची पार्टी ने शेखर की गलतियों की भी तीखी आलोचना की और गंभीर चेतावनी दी कि वह इनसे बाहर आए। लेकिन इस चेतावनी के बाद भी उसके अंदर सुधार नहीं आया।

हाल ही में संपन्न दक्षिण गढ़चिरोली डिवीजन के प्लीनम में प्रतिनिधियों ने शेखर की खुलकर आलोचना की। डिवीजन आंदोलन में चिन्हित नाकामियों के लिए मुख्य रूप से शेखर को जिम्मेदार ठहराया। चूंकि उसके अंदर स्वार्थ की भावना बढ़ी थी, इसलिए खुद की कमजोरियों और गलतियों के खिलाफ संघर्ष कर एक अच्छे कम्युनिस्ट बनने का प्रयास करने का रास्ता छोड़कर वह आंदोलन से भागने के रास्ते तलाशता रहा।

कुछ माह पहले हमारी पार्टी की पश्चिम रीजनल कमेटी ने उसकी तमाम गलतियों, आंदोलन का नेतृत्व करने में उसकी तरफ से लगातार हो रही नाकामियों और इससे आंदोलन को हो रहे नुकसान की गहराई से चर्चा की। उसके अंदर मौजूद कमजोरियों और खामियों, खासकर नौकरशाही व संकीर्णतावादी रुझानों को बदलने को कहा गया। उसे कहा गया कि वह अपने अंदर मौजूद सामंती विचारधारा के अवशेषों को दूर कर सर्वहारा के गुणों को आत्मसात करने का गंभीर प्रयास करे। लेकिन कमेटी की इन भावनाओं को समझने और उनका आदर करने का नैतिक साहस शेखर के अंदर नहीं था। आलोचनाओं से सीखने और खुद को बदलने की बजाए वह आखिर तक अपनी राजनीतिक कमजोरियों और सीमितताओं पर परदा डालने की ही कोशिश करता रहा। दोष हमेशा दूसरों के सिर मंड़ाने की कोशिश करता रहा। अंततः रीजनल कमेटी ने उसे रीजनल कमेटी से पदावनत करते हुए डिवीजन सचिव की जिम्मेदारी से हटाने का निर्णय ले लिया। सहज ही, शेखर ने इस फैसले को तहेदिल से स्वीकारने की कोशिश नहीं की। इसके बाद आंदोलन से भागने की तैयारियां तेज कीं।

नवम्बर महीने में उसने बिना बताए पार्टी कोष से कई लाख रुपए लेकर अपनी पत्नी विजया, जोकि गढ़चिरोली डिवीजनल कमेटी की सदस्या थी, को लेकर भाग गया। विजया भी गढ़चिरोली में 2004 से कार्यरत थी जिसे 2010 में डिवीजनल कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया गया था। पेरिमिलि एरिया उसका कार्यक्षेत्र था। उसके अंदर नौकरशाही व्यवहार मुख्य कमजोरी थी जिससे कैडर नाराज थे। अपनी गलतियों को सुधारने की उसने ईमानदारी से कोशिश नहीं की, बल्कि वह अपने पति की गलतियों का भी हमेशा समर्थन करती रही। आखिर में पार्टी छोड़ते समय भी उसने अपने पति का ही अनुसरण किया और जाते ही दोनों ने दुश्मन के सामने घुटने टेककर आत्मसमर्पण कर दिया। पार्टी के कई प्रस्तावों और गोपनीय दस्तावेजों को भी इन दोनों ने दुश्मन के हवाले कर दिया। अब शेखर सीधा पुलिस व कमाण्डो बलों को लेकर इलाके में घूमते हुए पार्टी के डम्पों और अन्य सामानों को दुश्मन के हवाले करने का घिनौना काम कर रहा है। पार्टी नेतृत्व, विभिन्न विभागों और गुरिल्ला दस्तों की गतिविधियों से सम्बन्धित तमाम जानकारियां दुश्मन को देकर हमले करवाने की कोशिश कर रहा है। इस तरह शेखर ने दुश्मन की शरण में जाते ही कट्टर प्रति–क्रांतिकारी की भूमिका अपनाई। हमारी पश्चिम रीजनल कमेटी शेखर और विजया को गद्दार ठहराते हुए उन्हें पार्टी से बहिष्कार करने का ऐलान करती है।

दशकों से जारी क्रांतिकारी आंदोलन में शेखर और विजया इस तरह के पहले व्यक्ति नहीं थे और आखिरी भी नहीं होंगे। शोषक वर्गों की राजसत्ता को उखाड़ फेंककर मजदूर–किसानों की एकता पर आधारित शोषित वर्गों की राजसत्ता कायम करने के लक्ष्य से जारी यह संग्राम बेहद कठोर और निर्मम वर्ग संघर्ष है। इस संघर्ष में अंत तक अपना सफर जारी रखने के लिए हर कम्युनिस्ट क्रांतिकारी को एक मोर्चे पर दुश्मन के साथ लड़ते हुए ही दूसरे मोर्चे पर खुद के अंदर मौजूद गैर–सर्वहारा रुझानों के खिलाफ भी हमेशा संघर्ष चलाते रहना चाहिए। जिस तरह हम रोज अपने घर–आंगन को साफ करते हैं उसी तरह अपनी गलतियों को भी सुधारते रहना चाहिए। इसके लिए आलोचना और आत्मालोचना की पद्धति को सतत व जीवंत तरीके से लागू करना चाहिए। इसमें विफल होने पर स्वार्थ की भावना हावी हो जाएगी और राजनीतिक पतन भी लाजिमी है। शेखर और विजया के पतन को भी इसी परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए।

गढ़चिरोली जिले की संघर्षशील जनता का वर्ग संघर्ष का लम्बा इतिहास रहा है। जनता ने अपने इस गौरवशाली इतिहास में संघर्षों में से कई नेता पैदा किए हैं। पिछले तीन दशकों से पार्टी के नेतृत्व में कई संगठित संघर्ष चलाने वाली और कई कुरबानियां देने वाली यहां की जनता को शेखर जैसे गद्दारों को मिट्टी में मिलाने का भी खासा अनुभव है। अब जबकि शेखर आंदोलन और जनता के हितों को नुकसान पहुंचाने की साफ मंशा से दुश्मन के साथ हाथ मिलाकर प्रति–क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल हो रहा है, जनता इसका भी माकूल जवाब दे देगी। सही सबक सिखा देगी। आइए, शेखर और विजया जैसे गद्दरों से घृणा करें और हजारों शहीदों तथा असंख्य जनता के अनमोल बलिदानों के बल पर आगे बढ़ रहे क्रांतिकारी आंदोलन में, जनयुद्ध में दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ें।

श्रीनिवास
प्रवक्ता,
पश्चिम रीजनल कमेटी – दण्डकारण्य
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)